जफरनामा- गुरचरन सिंह गिल

.....नई दिल्ली, एअरपोर्ट। मेरे साथ मेरे सहयोगी 'भाई लक्खीशाह फाउन्डेशन' के सरदार चरण सिंह नायक थे। हवाई अड्डे पर हमें छोड़ने के लिए ईरान ही में रहने वाले सरदार जगमोहन सिं एवं सरदार जगजीवन जोत सिंह आनन्द आये थे।

.....तेहरान, एअरपोर्ट। पौने चार घंटे के सफर के बाद हम ईरान की राजधानी तेहरान पहुंच चुके थे। हवाई अड्डे पर सरदार ओमरजीत सिंह, जो स. जगजीवन जोत सिंह के बड़े भाई हैं, ने आकर हमें फतेह बुलाई। बड़ी ठंड के दिन थे। तेहरान में बर्फ गिरी थी। स. ओमरजीत सिंह अपनी कार स्वयं चलाकर हमें एक धर्मी व बुजुर्ग सिख महानुभाव से हुई। वे थे-स. जगजीवन जोत सिंह आनन्द के पिता स. दामोदर सिंह आनन्द।

स. दामोदर सिंह आनन्द पेशे से व्यवसायी थे। लेकिन साथ ही, निष्काम कीर्तन करने वाले धार्मिक पुरुष भी थे। वे गुरबाणी का अच्छा ज्ञान रखते थे। उनके परिवार के सभी सदस्य फारसी भाषा में सहज बातचीत करते थे। लेकिन स्वयं सरदारजी फारसी भाषा के विद्वान थे। उनकी डायरियां गुरबाणी के नोट से भरी पड़ी थी।

स्व. ज्ञानी हरि सिंह, स. मक्खन सिंह, स. दामोदर सिंह आनन्द आदि ईरान में रहने वाले सिखों ने ईरान में 3 महत्वपूर्ण कार्य किये थे-1. गुरुद्वारा साहिब जी का भव्य निर्माण, 2. भारतीय छात्रों की शिक्षा के लिए सी.बी.एस.ई. सम्बद्ध विद्यालय का निर्माण, 3. भारतीय पद्धति से अन्तिम संस्कार करने के लिए 50 एकड़ में बना शमशान घाट।

गुरुद्वारा गंगा सिंह, सिंह सभा, तेहरान की प्रधान स. जगमोहन सिंह जी की माता सरदारनी भूपेन्द्र कौर थीं। वे एक विदूषी व धार्मिक महिला थी। स. ओमरजीत सिंह आनन्द गुरुद्वार के जनरल सैक्रेटरी थे।

ईरान में रहने वाला सिख समाज फारसी भाषा बोलने में निपुण था। वे फारसी लहजे में धारा प्रवाह बोलते थे। अपने दौरे के दौरान, जब भी गुरुद्वारे के सजे दीवान में कोई कार्यक्रम होता, तो कोई स्थानीय वक्ता गुरु गोविन्द सिंह जी के फारसी में लिखे 'ज़फरनामा' या भाई नन्दलाल जी की रचनाओं को ऐसे उद्धरित करता, मानो वे स्वयं अपनी मातृभाषा में बोल रहे हों।

पिता स. दामोदर सिंह आनन्द की प्रेरणा व मदद से स. जगजीवन जोत सिंह आनन्द ने ऐसे ही परिवेश में जिन्दगी जीते हुए, 'ज़फरनामा' व 'हिकायतनामा' का हिन्दी में काव्य रूपान्तर किया है। जो कि सराहनीय है।

किसी भी भाषा का किसी अन्य भाषा में अनुवाद करने से पूर्व उस भाषा को बोलने वालों के परिवेश को जानना आवश्यक है। शब्दों के धरातल पर अर्थ करने से अनुवाद की आत्मा विलुप्त हो जाती है। अनुवाद वैज्ञानिक भी होना चाहिए और आत्मा में बसने वाला भी। साहित्यिक काव्य रचना में रूपक, अलंकार, स्थानीय मुहावरे की समझ उसी परिवेश में जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों में आसानी से होती है।

रूखे शोधकर्ताओं की दुनिया से परे, भाषा के मर्म को जानने के लिए स्थानीय होना ही होगा। फारसी भाषा और फिर हिन्दी.... दोनों को ही स्थानीय धरातल पर जीते हुए सीखने का अवसर जिस एक व्यक्ति को मिला, वह था-जगजीवन जोत सिंह आनन्द। वे ईरान में जन्मे थे और फिर देहरादून में शिक्षा ग्रहण की। ऐसे दैवीय संयोग से ही हुआ जान पड़ता है। फिर साथ में, फारसी के विद्वान पिता का सहयोग भी था।

शब्द-रचना से प्रासाद के परिवेश को गढ़ना सरल नहीं था। मध्यकालीन गाथाएं, मध्यकालीन भाषा-शैली को वर्तमान में नए सिरे से रचना कठिन कार्य था।...और जोखिम भरा भी। आध्यात्म का विषय, औरंगजेब की तंग-खियाली, राजा, सम्राट, राजकुमारियों के बीच मुख्य विषय था-राजनीति। निश्चित ही, इस पुस्तक का केन्द्रीय बिन्दु राजनीति ही है। लेकिन अन्यान्य सभी बिन्दुओं पर भाषा का चतुर परिवर्तन काव्य-शैली की

रणनीति के हिसाब से आवश्यक था। कभी भाषा संस्कृत-गर्भित भी हो गई है, तो यह राजसी परिवेश को ध्यान में रखकर ही। फिर फारसी भाषा की रचनाओं का हिन्दी में काव्य रूपान्तरण भी आश्चर्यजनक है। यह साहित्य को नया आयाम देने वाला है। ''विजय प्रपत्र'' इस दृष्टि से श्रेष्ठ काव्य रचना भी है।

चूंकि ''ज़फ़रनामा'' का मूल विषय राजनीति है। अत: राजप्रासादों में, गलियारों में, राजनीति की मलिनता, दलदल, कीचड़ का चित्र ऐसे उकेरा गया है, जो यथार्थ दर्शाता है। यह गुरु गोविन्द सिंह जी की लेखनी का ही कमाल है। मरघट जैसा जीवन-दर्शन, बेतुके रण में मृतजन और मृत हो चुके रण में एक एकाकी राष्ट्रवादी का संवाद ही 'ज़फ़रनामा' है। जेहादी रण के कोलाहल में विलुप्त संवाद की खोज और राष्ट्र जीवन में संवाद की प्रतिस्थापना ही 'ज़फ़रनामा' है। 'ज़फ़रनामा' का शाब्दिक अर्थ है -जीत की चिट्ठी। एक विचारी जेहादी मानसिकता के विस्तार पर पूर्ण विराम है-'ज़फ़रनामा'। दर्शन के धरातल पर राष्ट्र की विजय का एक प्रपत्र।

'तुज़्के जहाँगीरी' ग्रंथ में मुगल शासक जहांगीर स्वीकारते हैं कि वे स्वयं ही पंचम् गुरु अर्जुनदेव जी के महान बलिदान के लिए जिम्मेदार हैं। गुरु अर्जुनदेव जी की शहादत के लिए उत्तरदायी, यथार्थ में, स्वयं संवाद से बचना चाहते थे। नवम् गुरु तेगबहादुर जी, माता गुजरी जी, चारों साहिबजादों के बलिदान के मूल में ज़बरन एक विचारी समाज बनाने की चाहत है। यदि इन घटनाओं का गम्भीरता से अवलोकन करें, तो पायेंगे कि यह संवाद से पलायन की कवायद भी है। धर्माधिकारियों के आदेश, उलेमाओं के फतवे संवाद की हत्या का प्रयास भर ही है।

कभी-कभी मूढ़, धर्मांध राजनैतिक व्यक्ति के साथ संवाद की परिकल्पना ही हैरानी पैदा करती है। लेकिन गुरु गोबिन्द सिंह जी का सृजनात्मक नैपुण्य सिद्ध करता है कि भारतीय समाज को जड़ों तक सींचने के लिए संवाद ही उस कालखंड में समाज की नवसृजना का शस्त्र बना। आज भी भागते आतंकवाद के चेहरे को देखें, उसका भागना मूलत: संवाद के प्रश्नों से ही हैं। भारतीय आध्यात्मिक इतिहास में वेद, शास्त्र सभी संवाद के माध्यम रहे हैं। अत: स्वाभाविक ही है कि संवाद भारत का चारित्रिक चेहरा है।

अत: गुरु गोबिन्द सिंह जी की फारसी भाषा में मुगल औरंगजेब को सम्बोधित रचनाएं 'ज़फ़रनामा' और 'हिकायतनामा' महान ऐतिहासिक रचनाएं हैं। वे रचनाएं औरंगजेब के चरित्र का ऐतिहासिक दस्तावेज भी है। जो सिद्ध करता है कि संवाद औरंगजेब की कमजोरी थी, और संवाद ही औरंगजेब की हार भी।

'विजय प्रपत्र' 'ज़फ़रनामा' व 'हिकायतनामा' का हिन्दी में काव्य रूपान्तर है। 'विजय प्रपत्र' में जो बात सामने आती हैं, वह है-अनुवाद के समय की तटस्थता। पूर्वाग्रह, धार्मिकता..... इन सबसे परे मूल काव्य रचना का यथार्थपरक अनुवाद ।

कवि समाज का आईना होता है। यही कारण है कि एक अच्छे काव्य में समाज का प्रतिबिम्ब झलकता है। काव्य रूपान्तर 'विजय प्रपत्र' समाज द्वारा भोगी गई मुगलकालीन त्रासदी एवं संस्कृति की यथार्थानुभूति के माध्यम से भारतीय हिन्दी काव्य जगत के क्षितिज पर भाषित एवं स्थापित होने का गौरव स. जगजीवन जोत सिंह आनन्द ने प्राप्त किया है। ●